

for Rs. 665 lakhs in 1963-64. Another Rs. 100 lakhs is also being allowed to be spent additionally.

**श्री बड़ :** मैं यह जानना चाहता हूँ कि माइनर इरिगेशन स्कीम्स में जो स्टेट्स-वाइज कमी की गई है क्या उस को फिर से रैस्टोर करने का शासन का विचार है ?

**Shri Shinde:** The actual allocations have been increased or raised. In all the States, practically the targets which were fixed have been raised by as much as 50 per cent or 40 per cent or 30 per cent.

**Shri S. M. Banerjee:** May I know whether it is a fact that the recommendations submitted by the Sivaraman Committee for the eastern districts of U.P. about minor irrigation have not at all been implemented, and if so, the steps taken to introduce minor irrigation schemes in the eastern districts of U.P.?

**Shri A. M. Thomas:** That is not correct. All those recommendations are being implemented, and there is satisfactory progress on the minor irrigation front.

**श्री यशपाल सिंह :** जैसे कि अभी दो हफ्ते पहले सिंचाई मंत्री जी ने बहस के दौरान कहा था कि माइनर इरिगेशन के मातहत अगर लिफ्टिंग का इंतज़ाम कर दिया जाय तो ४० फ्रीसदी प्राबलम हल हो सकती है तो उस ४० फ्रीसदी को सौल्व करने के लिए क्या किया जा रहा है ;

**Shri Shinde:** The hon. Member may be asked to repeat his question.

**Mr. Speaker:** Shri D. C. Sharma.

**Shri D. C. Sharma:** May I know on what criteria the grants or subsidies for these minor irrigation works are given? May I know also the State which has got the maximum and also the State which has got the least amount?

**Shri Shinde:** The statement has already been laid on the Table of the

House, and all these details have been mentioned in the statement, and the hon. Member may kindly look into the statement.

**Shri D. C. Sharma:** The criteria are not given.

**Shri A. M. Thomas:** The criterion is the feasibility of the scheme.

**Shri J. P. Jyotishi:** May I know whether it is a fact that in certain areas due to the lack of knowledge on the part of the engineers, the schemes taken up under this programme of minor irrigation have failed, and hence there is a lot of resentment amongst the people against this?

**Shri A. M. Thomas:** We are not aware of this. If any specific instance is brought by the hon. Member to the notice of the Ministry, that would be enquired into and suitable steps taken.

#### Austerity Diet in Delhi Zoo

+

{ **Shri Onkarlal Berwa:**  
 { **Dr. L. M. Singhvi:**  
 \*989. { **Shri Rameshwar Tantia:**  
 { **Shri Sidheshwar Prasad:**

Will the Minister of **Food and Agriculture** be pleased to state:

(a) whether it is a fact that Delhi Zoo proposes to introduce austerity diet for its inmates in order to effect economy; and

(b) if so, in what manner and to what extent?

**The Minister of State in the Ministry of Food and Agriculture (Dr. Ram Subhag Singh):** (a) and (b). No such proposal is under consideration. Some saving has, however, been effected with the introduction of a new diet schedule from November, 1962 substituting buffalo meat for mutton in the case of large carnivores such as lions, tigers, panthers and pumas.

**श्री श्रीकारलाल बेरवा :** मैं जानना चाहता हूँ कि अगर इस पर विचार किया

जायगा तो कब तक किया जायगा और इस कटौती के करने से कितनी बचत होगी ?

**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य-मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) :** कटौती करने का विचार नहीं है। हम लोग चाहते हैं कि जो जानवर जू में हैं उन का स्वास्थ्य अच्छे से अच्छा रहे लेकिन यह जो भैंस का मांस देना शुरू किया गया है उस को कीमत कम है, इसलिए खर्च में प्रतिमास ढाई हजार रुपये की कमी आ गई है।

**श्री श्रींकार लाल बेरवा :** जो खुराक में कटौती की गई है तो उस खुराक की कटौती करने से उन के स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ेगा ?

**डा० राम सुभग सिंह :** स्वास्थ्य पर कोई असर नहीं पड़ा है और न हम लोग उस पर असर डालना चाहते हैं। उन का स्वास्थ्य अच्छे से अच्छा बनाये रखेंगे और उस के लिए अगर कुछ ज्यादा पैसे भी खर्च करने की जरूरत होगी तो वह भी हम करेंगे। लेकिन यह बकरे और भेड़ों के मांस की जगह भैंसों का मांस जो देना शुरू किया गया है यह इसलिए कि उस मांस की अपेक्षा भैंस का मांस सस्ता और हल्क भी ज्यों की त्यों रहती है। उस पर कोई खराब असर नहीं पड़ता है।

**Shri Kapur Singh:** May I know whether the luxurious diet-regimen prescribed for the recently acquired Renu, the Gibbon, may ultimately become the standard for food menus of other captive inmates of the zoo?

**Dr. Ram Subhag Singh:** The animal Renu came here recently. All the animals have different diet. So one diet cannot be a standard for all of them. But we shall give the best diet to all the animals.

**Shri Fatehsinhrao Gaekwad:** I believe there is a possibility of the zoo acquiring a pair of rare white tigers from Rewa. Will they be given preferential treatment or will they be subjected to the same diet?

**Mr. Speaker:** Let them come first in the zoo.

**Shri Tyagi:** I am anxious to know whether this change of diet has been effected with a view to effect economy in expenditure or it is done from the point of view of the health of the animals. How are these animals taking to the new diet? Otherwise, it is the unkindest cut against these animals.

**Mr. Speaker:** It has been answered already.

**Dr. Ram Subhag Singh:** I would welcome my hon. colleague, Shri Tyagi, to the zoo. He will be happy to see. (Interruptions).

**Mr. Speaker:** Order, order.

**Shri Tyagi:** I protest. I am a human being. I am not animal. How does he ask me to go to the zoo?

**Mr. Speaker:** Only as a casual visitor, not to be kept there.

**श्री शिव नारायण :** क्या यह सत्य है कि दिल्ली के जू में इन्तजाम बहुत अच्छा होने के कारण और जानवरों ने दरखास्त दी है कि उन को भी वहां पर एडमिट कर लिया जाये ?

**डा० राम सुभग सिंह :** वहां इन्तजाम तो बहुत अच्छा है। हम को जितने भी नये नये दंग के जानवर मिलेंगे, उन सब का हम लोग उपयोग करेंगे और वहां रखने की व्यवस्था करेंगे।

**Shri Hari Vishnu Kamath:** If I heard the Minister aright, he said it was in November that this change of diet was made. Is that right?

**Dr. Ram Subhag Singh:** Yes.

**Shri Hari Vishnu Kamath:** That means, after the emergency was declared on October 26. If so, while feeding these inmates on this new diet, on this emergency diet, are

attempts also being made by signs and gestures, if not through the spoken word, to instil into the minds of these inmates a sense of national emergency created by the Chinese aggression..... (Interruptions).

**Mr. Speaker:** The hon. Member offers that service.

**श्री सिद्धेश्वर प्रसाद :** श्रीमन्, मैं यह जानना चाहता हूँ कि चिड़ियाघरों में जानवरों को जो भोजन दिया जाता है, क्या उस के लिए कोई कमेटी वगैरह बनाई गई है या कोई एक्सपर्ट वगैरह हैं, जिन की राय के मुताबिक उन को भोजन दिया जाता है या चूक इमर्जेंसी आ गई है, इसलिए यह सारा परिवर्तन किया जा रहा है।

**डा० राम सुभग सिंह :** चिड़ियाघर के जो अधिकारी हैं, वे लोग बराबर इस की देख-रेख करते हैं और एक नैशनल कमेटी भी है, जिस के माननीय प्रश्नकर्ता महोदय भी सदस्य हैं। हम लोग मौके मौके पर संसद-सदस्यों को भी वहाँ पर ले जाते हैं। बाहर के डाक्टर भी वहाँ देखरेख करने के लिए हैं।

**फलों और पशुओं के फार्म**

+

\*१६६० { श्री भक्त दर्शन :  
श्री भागवत झा आजाब :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री २८ अगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या ६५३ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि ऊँचे स्थानों पर फलों तथा पशुओं के फार्म स्थापित करने के बारे में इस बीच क्या प्रगति हुई है ?

**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) :** जहाँ तक हिमाचल प्रदेश के मण्डी जिले के कटौला स्थित जरसी ब्रीडिंग फार्म का सम्बन्ध है, वह फार्म संतोष-जनक कार्य कर रहा है। इस फार्म के लगभग १० जरसी बैलों को पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और काश्मीर, उत्तर प्रदेश और आसाम के राज्यों में बांट दिया गया है

ताकि पहाड़ी पशु विकास योजना के अन्तर्गत कृत्रिम गर्भाधान के तकनीक द्वारा पहाड़ी पशुओं का विकास किया जा सके। फलों के फार्मों के सम्बन्ध में तो वही स्थिति है जो २८ अगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या ६५३ के उत्तर में बताई गई थी।

**श्री भक्त दर्शन :** श्रीमन्, पिछले प्रश्न का उत्तर देते हुए माननीय मन्त्री जी ने बताया था कि उत्तर प्रदेश सरकार ने अपने पर्वतीय क्षेत्रों के लिए एक योजना प्रस्तुत की है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि उसके बारे में क्या निर्णय किया गया है।

**डा० राम सुभग सिंह :** हम लोगों ने कोशिश की थी कि उत्तर प्रदेश पर्वतीय क्षेत्र में कलसी नामक स्थान पर जो पशुओं का फार्म है, उसको भारत सरकार ले ले और वहाँ पर जरसी जानवरों के लिए एक केन्द्र खोला जाये। लेकिन उत्तर प्रदेश सरकार ने सोचा कि वही उसको चलाती रहे। इसलिए हिमाचल प्रदेश में कटौला में और मंसूर में बंगलौर के पास स्थित हजरघाटा में जरसी जानवरों के दो केन्द्र स्थापित किये गए हैं। लेकिन अगर उत्तर प्रदेश सरकार चाहेगी, तो हम कलसी फार्म को भी मदद देंगे।

**श्री भक्त दर्शन :** श्रीमन्, अभी हाल ही में शिमला में पर्वतीय क्षेत्रों के विकास के सम्बन्ध में जो गोष्ठी हुई थी, उसमें फलों और पशुओं के केन्द्र स्थापित करने के बारे में कुछ महत्वपूर्ण सुझाव रखे गए थे। मैं यह जानना चाहता हूँ कि उन सुझावों पर क्या अमल किया गया है और क्या उन के कारण इस कार्यक्रम में और प्रगति की जा रही है ?

**डा० राम सुभग सिंह :** हमारी एक फील्ड कंटल डेवेलपमेंट स्कीम है, जिस के अन्तर्गत आसाम, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, जम्मू-काश्मीर और पंजाब के पहाड़ी हिल्सों में मदद देने का विचार है और इसके केन्द्र भी स्थापित किये गए हैं। पंजाब में पालमपुर में और आसाम में गोहाटी के पास, और दूसरी